# "चाकर चाकरी"

• एह किनेही आसकी दूजै लगै जाई । नानक आसक कांढीऐ सद ही रहै समाइ । सलाम जबाब दोवै करे मुंढह घुथा जाई । नानक दोवै कूड़ीआ थाई न काई पाई ।

**अर्थ:-** अगर कोई प्रेमी जीव अपने प्यारे के बिना किसी और में भी चित्त जोड़ ले, तो उसके इश्क को सच्चा इश्क नहीं कहा जा सकता । हे नानक ! वही मनुष्य सच्चा आशिक कहा जा सकता है जो हर समय अपने ही प्रीतम की याद में डूबा रहे । जो मनुष्य अपने मालिक प्रभु के

हुक्म के आगे कभी तो सिर निवाता है और कभी उसके किए ऊपर एतराज करता है, वह मालिक की रजा के राह पर चलने से बिल्कुल ही वचित रहता है । हे नानक ! ऐसे मनुष्य का सिर झुकाना और ऐतराज दोनों ही झूठे हैं, इनके दोनों में कोई भी बात मालिक के दर पर मंजूर नहीं होती ।

• चाकर लगै चाकरी नाले गारब वाद । गला करे घणेरीआ खसम न पाए साद । आप गवाई सेवा करे ता किछ पाए मान । नानक जिसनो लगा तिस मिलै लगा सो परवान ।1।म02।

अर्थः- जो कोई नौकर अपने मालिक की नौकरी भी करे, और साथ - साथ अपने मालिक के आगे आकड़ भरी बातें भी करे और ऐसी बाहरी बातें मालिक के सामने करे, तब वह नौकर मालिक की खुशी हासिल नहीं कर सकता । मनुष्य अपना आपा मिटा के मालिक की सेवा करे तब ही उसको मालिक के दर से कुछ आदर मिलता है । तब ही, हे नानक ! वह मनुष्य अपने उस मालिक को मिलता है जिसकी सेवा में लगा हुआ है । अपना आप गवा के सेवा में लगा हुआ मनुष्य ही मालिक के दर पर स्वीकार होता है ।

• जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ । बीजे बिख मंगै अंम्रित वेखहु एहु निआउ ।2। म0-2।

अर्थः- जो कुछ मनुष्य के दिल में होता है वही प्रगट होता है भाव, जैसी मनुष्य की नीयत होती है वैसे ही उसे फल लगता है, अगर अंदर नीयत कुछ और हो, तो उसके उलट मुंह से कह देना व्यर्थ है । ये कैसी आश्चर्य भरी बात है कि मनुष्य बीजता तो जहर है भाव, नीयत तो विकारों की तरफ है पर उसके फल के रूप में मांगता अमृत है ।

नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि । जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि । वसतू अंदरि वसत समावै दूजी होवै पासि ।

**अर्थ:-** कोई भी मनुष्य परख के देख ले, किसी अंजान से लगाई हुई मित्रता कभी सिरे नहीं चढ़ती, क्योंकि उस अंजान का रवईआ वैसा ही रहता है जैसी उसकी समझ होती है इसी तरह उस मूर्ख मन के आगे लगने का कभी कोई लाभ नहीं होता, ये मन अपनी समझ अनुसार विकारों में ही लिए फिरता है । किसी एक चीज में कोई और चीज तभी पड़ सकती है अगर उसमें से पहली पड़ी हुई चीज निकाल ली जाए इस तरह इस मन को प्रभु की तरफ जोड़ने के लिए जरूरी है कि इसका पहला स्वभाव तबदील किया जाए ।

साहिब सेती हुकम न चलै कही बणै अरदासि । कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ।3। म0-2।

**अर्थ:-** पति से हूकम किया हुआ कामयाब नहीं हो सकता, उसके आगे तो विनम्रता ही फबती है । हे नानक ! धोखे का काम करने से धोखा ही होता है भाव, जितनी देर मनुष्य दुनिया के धंधों में लगा रहता है, तब तक चिन्ता में ही फसा रहता है, मन प्रभु की महिमा करके ही खिड़ाव में आता है, सही मायने में प्रसन्नता पाता है ।

- नालि इआणे दोसती वडारु सिउ नेहु । पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ।4।

**अर्थ:-** अंजान से मित्रता व अपने से बड़े के साथ प्यार ये ऐसे ही हैं जैसे पानी में लकिर, उस लकिर का कोई निशान नहीं रहता ।

होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि । जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ।5। पउड़ी।

**अर्थः-** अगर कोई अंजान हो और वह कोई काम करे, वह काम सिरे नहीं चढ़ सकता अगर कोई एक - आध काम वह ठीक कर भी ले तो दूसरे काम को बिगाड़ देगा ।

• चाकर लगै चाकरी जे चलै खसमै भाई । हुरमति तिस नो अगली ओह वजहु भि दूणा खाई । खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाई ।

**अर्थः-** जो नौकर अपने मालिक की मर्जी के मुताबिक चले तभी समझो, कि वह मालिक की नौकरी कर रहा है, एक तो उसे बड़ी इज्जत मिलती है, दूसरा तनख्वाह भी मालिक से दोगुनी लेता है । पर, अगर सेवक अपने मालिक की बराबरी करता है, वह मन में शर्मिंदगी ही उठाता है ।

वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाई । जिसदा दिता खावणा तिस कहीऐ साबास । नानक हुकम न चलई नालि खसम चलै अरदास ।22।

**अर्थः-** अपनी पहली तनख्वाह भी गवा बैठता है और सदा मुंह पर जूतियां खाता है । हे नानक ! जिस मालिक का दिया हुआ खाएं, उसकी सदा उपमा करनी चाहिए मालिक पर हुक्म नहीं किया जा सकता, उसके आगे अर्ज करनी ही फबती है ।

• जित कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ । मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ।

**अर्थः-** जब मनुष्य ने अपने किए का फल खुद ही भोगना है तो फिर कोई बुरी कमाई नहीं करनी चाहिए जिसका बुरा फल भोगना पड़े । बुरा काम भूल के भी ना करें, गहरी विचार वाली नजर मार के देख लें कि इस बुरे काम का नतीजा क्या निकलेगा ।

एह किनेही चाकरी जित भउ खसम न जाई । नानक सेवक काढीऐ जि सेती खसम समाई ।2। पउड़ी । जित सेविऐ सुख पाईऐ सो साहिब सदा सम्हालीऐ । (2-474-475)

**अर्थः-** जिस सेवा के करने से सेवक के दिल में से अपने मालिक का डर दूर ना हो, वह सेवा असली सेवा नहीं है । हे नानक ! सच्चा सेवक वही कहलवाता है जो अपने मालिक के साथ एक - रूप हो जाता है । जिस मालिक का स्मरण करने से सुख मिलता है, उस मालिक को सदा याद रखना चाहिए ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

## ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"